समाजशास्त्र
बी०ए० I

PAGE NO.
DATE / /

परिवार के प्रकार — मानव समाज के विकास के साथ-साथ परिवार के अनेक रूप अस्तित्व में आये है प्रत्येक स्थान की भौगोलिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियो ने भिन्न-भिन्न प्रकार की व्यवस्था को जन्म दिया है सदस्यो की संख्या, विवाह का स्वरूप स्त्री-पुरुष की सत्ता निवास वंशनाम आदि के आधार परिवार का वर्गीकरण किया जाता है।
विभिन्न परिवारो का वर्गीकरण निम्न प्रकार है —

संख्या के आधार पर
क- केन्द्रीय परिवार या नाभिक परिवार
ख- संयुक्त परिवार
ग— विस्तृत परिवार

निवास के आधार —
(क) पितृ-स्थानीय परिवार
(ख) मातृ स्थानीय परिवार
(ग) नव स्थानीय परिवार
(घ) मातृ-पितृ स्थानीय परिवार

अधिकार के आधार पर-
(क) पितृसत्तात्मक परिवार
(ख) मातृसत्तात्मक परिवार

PAGE NO.
DATE: / /

(4) उत्तराधिकार के आधार पर -
(क) पितृमार्गी परिवार
(ख) मातृमार्गी परिवार
(5) वंशनाम के आधार पर -
(क) पितृ-वंशीय परिवार
ख मातृ-वंशीय परिवार
(ग) उभयवाही परिवार
(घ) हि--नामी परिवार
विवाह के आधार पर -
(6) (क) एक विवाही परिवार
(ख) बहु-विवाही परिवार

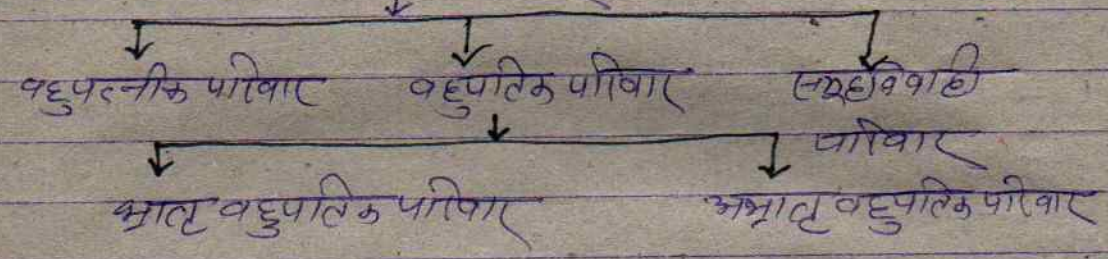

अन्यरूप -
क जन्ममूलक परिवार
ख प्रजननमूलक परिवार
ग- रक्तसम्बन्धी परिवार
घ विवाह सम्बन्धी परिवार
ङ: ग्रामीण परिवार
-च- नगरीय परिवार

PAGE NO.
DATE : / /

परिवार के प्रकार्य -

परिवार समाज की आधारभूत इकाई है मानव ने अनेकानेक अधिकार किये है। किन्तु आजतक वह कोई भी ऐसी व्यवस्था नहीं कर पाया है।

प्राणीशास्त्रीय कार्य —

परिवार के प्राणीशास्त्रीय कार्य निम्न है।

यौन इच्छाओं की पूर्ति —

मानव की आधारभूत आवश्यकताओं में यौन सन्तुष्टि भी महत्वपूर्ण है। परिवार ही वह समूह है जहाँ मानव समाज द्वारा स्वीकृत विधि से व्यक्ति अपनी यौन इच्छा की पूर्ति करता है।